4. भारतीय दर्शन वृतियों के दमन पर नहीं शमन पर आधारित है, इस कथन के आलोक में 'चित्रलेखा' उपन्यास की समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

'चित्रलेखा चरित्र-प्रधान उपन्यास है'- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में चित्रलेखा का चरित्र-चित्रण कीजिये।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-दृष्टि पर विचार करें। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास में वैवाहिक-संबंधों के बदलते मूल्यों को रेखांकित किया गया है- इस कथन की समीक्षा कीजिये।

31/5/23 (M)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4007 **E**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिन्दी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : IV

Ramanujan College Library Kalkaji, New Delhi-110019

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (7+8=15)

(क) "मैं तो आपसे बार-बार कह चुका, आप मेरे लिए कुछ ना करें। मुझे धन की जरूरत नहीं। आपकी भी वृद्धावस्था है। शांत-चित्त होकर भगवत-भजन कीजिये। समरकान्त तीखे शब्दों में बोले "धन न रहेगा लाला, तो भीख मँगोगे। यों चैन से बैठकर चरखा ना चलाओगे। यह तो न होगा, मेरी कुछ मदद करो, पुरुषार्थहीन मनुष्यों की तरह कहने लगे, मुझे धन की जरूरत नहीं? कौन है जिसे धन की जरूरत नहीं? साधु-सन्यासी तक तो पैसों पर

प्राण देते हैं। धन बड़े पुरुषार्थ से मिलता है। जिसमें पुरुषार्थ नहीं, वह क्या धन कमाएगा? बड़े-बड़े तो धन की उपेक्षा कर ही नहीं सकते, तुम किस खेत की मूली हो!"

अथवा

"अमि-जोत के सहमे हुए चेहरे और क्षण भर को डॉक्टर के माथे पर खिंच आए बल .....लगा जैसे शकुन से ही कोई भरी अपराध हो गया हो। जरूर ही उस समय उसके चेहरे पर बड़ी कातर-सी बेबसी उभर आई होगी, तभी तो डॉक्टर ने पीठ सहलाकर उसे दिलासा दी, "बच्चों की बात को लेकर तुम इतनी परेशान क्यों हो रही हो? टैंक इट ईजी..." पर खुद वह शायद ईजी नहीं हो पाये थे।

(ब) शकुन चक्की पीस-पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने आप को स्वाहा कर देने वाली माँ नहीं थी; बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व, आकांक्षाएँ और आजीविका के साधनों से तृप्त माँ थी। इस नारी और माँ के आपसी द्वंद का अध्ययन ही शकुन को उसका वर्तमान रूप देता था। आज जो लगता है कि कहानी में बिखरी लोक-कथाएँ अनायास ही नहीं आ गई हैं, वे शकुन के जीवन की दो नितांत विरोधी स्थितियाँ, मिथ और वास्तविकता के अंतर्विरोध को उजागर करती है"।

अथवा

"मनुष्य स्वतंत्र विचारों वाला प्राणी होते हुए भी परिस्थितियों का दास है। और यह परिस्थिति-चक्र क्या है, पूर्वजन्म के कर्मों के फल का विधान है। मनुष्य की विजय वहीं संभव है, जहां वह परिस्थितियों के चक्र में पड़कर उसी के साथ चक्कर न खाए, वरन अपने कर्तव्याकर्तव्य का विचार रखते हुए उस पर विजय पावे"।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखें : (7+8=15)

(क) लाला श्रीनिवास दास

(ख) प्रेमचंद

(ग) फणीश्वरनाथ रेणु

(घ) मन्नू भण्डारी

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास के पात्र गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हैं - इस कथन की समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

'कर्मभूमि' उपन्यास के आधार पर प्रेमचंद की भाषा शैली पर प्रकाश डालें?